International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 11, Issue 5, May 2024
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

कामायनी के पात्रों की मिथकीय चेतना

डॉ. हीरालाल शर्मा

हिंदी विभाग

शासकीय मदनलाल शुक्ल महाविद्यालय

सीपत बिलासपुर (छ.ग.)

प्रागैतिहासिक काल से संस्कृति, चिंतन और धार्मिक मान्यताओं को एक धागे में पिरोकार माला के समान सहेजकर रखने का कार्य मिथक साहित्य से होता आ रहा है। इससे साहित्य में निरंतर सत्य के मूल्यों की नैरंतर्यता , अभिनवता, विश्वनियता और प्रभुविष्णुता बनी रहती है। साहित्य का प्रादुर्भाव एवं विकास भी मिथक से जुड़ा हुआ ही माना जाता है। मिथको के माध्यम से ही साहित्य में समय-समय पर नए-नए आयाम उदघाटित होते रहते हैं। अमूर्त सूक्ष्म भावो की यथार्थता को मिथक ' बिम्ब ' के माध्यम से प्रस्तुत करता है। मिथको के प्रयोजन को बताते हुए जो त्रिभुवन नाथ शुक्ल लिखते हैं - " **वह आदिम युग से परंपरा रूप में प्राप्त मान्यताओं, संस्कारों एवं धार्मिक अनुष्ठानों की व्याख्या करता है। इसी से संबद्ध ' मिथक ' रचना का दूसरा प्रयोजन प्राचीन विश्वासों और संस्कारों को मान्यता प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त मिथको के द्वारा और भी महत्व उद्देश्यों की सिद्धि होती है। वे एक ओर जहां संपूर्ण मानवता की अखंडता के व्यंजक है, वहीं दूसरी ओर अति बौद्धिकता से संपन्न अनास्था, संत्रास, व्यर्थता आदि की दुष्कल्पनाओं से अभिभूत वर्तमान युग के मानव की चेतना में जीवन के शाश्वत तथा अखंड प्रवाह में प्रीति उत्पन्न पर मिथक उसे अंधकार से प्रकाश की ओर, असक से सत्य की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर प्रेरित करने का प्रभावी साधन है। इस प्रकार मीठा का ज्ञान जीवन की भौतिक समस्याओं को तोड़कर मानव चेतना को परम तत्व तथा परमार्थ उन्मुख करता है।** "

कामायनी का कथानक प्रख्यात हैं। इसकी कथावस्तु में इतिहास का संबंध एवं पत्रों से हैं। घटना जल प्लावन की जो प्रलयकाल के वातावरण में ऐतिहासिक पुरुष मनु एवं श्रद्धा के माध्यम से सृष्टि के निर्माण से संबंधित

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

है। इसका उल्लेख भारतीय ग्रंथो, अथर्ववेदो, शतपथ ब्राह्मण, विभिन्न पुराण ग्रंथो के साथ ही साथ बाइबल, कुरान, यूनानी, सुमेरिया आदि ग्रन्थ में पाया जाता है। प्रसाद का अपनी प्राचीन संस्कृति के प्रति अपार स्नेह एवं लगाव रहा है। वे साहित्य को अपनी संस्कृति से विलग नहीं कर सके, करण की साहित्य एवं संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं। किसी भी साहित्य की पहचान उसकी अपनी संस्कृति से हैं। कामायनी को एक कालजयी कृति बनाने में मिथको की अहम भूमिका रही है। कामायनी का मिथक भारतीय साहित्य के मूल स्रोतों को उद्घाटित करता है। इतना ही नहीं इसके माध्यम से भारतीय साहित्य एवं उनके गौरवपूर्ण सांस्कृतिक इतिहास की पुष्टि भी होती है। मिथको के साक्ष्य पर कामायनी का अध्ययन करते समय एक महत्वपूर्ण बात यह उभर कर आती है कि प्रसाद ने सभी प्राचीन स्रोतों को आत्मसात करके उसे अपने युगीन संदर्भ में प्रस्तुत करने का एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। यही कारण है कि आज भी कामायनी हिंदी महाकाव्य का एक मध्यवर्ती पड़ाव बन चुका है। जिसका स्पर्श किए बिना शायद आधुनिक महाकाव्य की पीठिका तैयार नहीं हो पाती और प्रसाद एक युग प्रवर्तक रचनाकार। अपने प्राचीन संदर्भो का वाख्यान करते हुए प्रसाद ने जिस ढंग से कथासूत्रों को पिरोया हैं। वह हिंदी साहित्य की महाकाव्य परंपरा का एक अमूर्त एवं अभिनव पक्ष हैं। कामायनी के प्रमुख एवं गौण कथा प्रसंगो को एक पुरे घटनाक्रम मे अभिव्यक्त कर देना यह मिथको के सहारे ही संभव हो सका हैं। इसलिए कहा जा सकता हैं कि कामायनी मे प्रयुक्त मिथक उसकी रचनाधर्मिता का अर्थ हैं, और इति भी। प्रसाद ने कामायनी मे प्रलय एवं नवनिर्माण मे तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित किया हैं -

पुरातनता का यह निर्माक

सहन करती न प्रकृति पल एक.,

नित्य नूतनता का आनंद

किये हैं परिवर्तन मे टेक।

<u>पात्र संबंधी मिथक</u>

मनु - मनु प्रथमतः इतिहास पुरुष है। मनु के वैदिक संदर्भ के अनेक साक्ष्य मिले हैं। प्रसाद कामायनी की भूमिका में लिखते हैं – ‘ **मनु भारतीय इतिहास के आदि पुरुष हैं। राम कृष्ण और बुद्ध इन्हीं के वंशज है। सत्यपाठ ब्राह्मण में उन्हें श्रद्धा देव कहा गया है। श्रद्धादेवो वै मनु (का.1प्र.1) भागवत में इन्हीं वैवस्वत मनु और श्रद्धा से मानवीय सृष्टि का आरंभ माना गया है। कामायनी में मनु एक ऐसे पुरुष है जो सृष्टि की कथा व्यथा से पूरी तरह भिन्न है । इसलिए मनु मात्रा उत्तुंग शिखर पर अधिष्टत रहने का भाव नहीं रखते हैं अपितु उसमें समुचित मानवता के पुनः प्रतिष्ठित होने का भाव है।‘**

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छाह एक पुरुष भीगे नैनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह। कामायनी का ध्येय मन का उदात्ती करण से है जो निराशा , संताप कुंठाओं से ऊपर उठकर नवीन दृष्टि स्थापित करने की है। प्रसाद ने मनु को मन के रूप में प्रस्तुत किया है –

मनन करावेगी तू कितना ?

उस निश्चित जाति का जीव

अमर मारेगा क्या ? तू कितनी

गहरी डाल रही है नींव ।

कामायनीकार ने मनु की ऐतिहासिकता का उल्लेख उसके अतीत की विस्मृतियों से करते हैं -

चिंता करता हूं मैं जितनी

उस अतीत की उसे सुख की

उतनी ही अनंत में बनती

जाती रेखाएं दुख की।

कामायनी में मनु मन के प्रतीक के रूप में विभिन्न मनोवृतियों अवशिष्ट पुरुष चिंतक, गृहस्थ, प्रजापति, क्रियाशील एवं समदर्शी के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हुये हैं । जल प्रलय के अनंतर संपूर्ण सृष्टि से ध्वंस हो जाने पर एक मात्र बचे पुरुष के रूप में वह हमारे सामने मिथक साहित्य के माध्यम से ही अवतरित होते हैं जो बाद में सृष्टि के नियामक बन जाते हैं और ' **सर्वे भवंतु सुखिनः** ' के रूप में कार्यशील रहते हैं।

श्रद्धा - श्रद्धा का उल्लेख हमारे पुराणों में आरंभ से ही देखने को मिलता है । ऋग्वेद में यदि वह काम की पुत्री बताई गई है तो तैतेरिय ब्राहमण में वह काम की माता कही गई है। कहीं उसे सूर्य की पुत्री माना गया है तो कहीं परमब्रह्म की और कहीं दक्ष प्रजापति की। प्रसाद ने कामायनी के आमुख में लिखा है - ' ऋग्वेद में श्रद्धा और मनु दोनों का नाम ऋषियों की तरह मिलता है श्रद्धा वाले सूक्त में सायण ने श्रद्धा का परिचय देते हुए लिखते हैं कामगोत्रजा श्रद्धा नामर्षिका श्रद्धा कामगोत्र की बालिका है, इसलिए श्रद्धा नाम के साथ उसे कामायनी कहा जाता है।" भागवत के अनुसार कामायनी में भी मनु के साथ श्रद्धा को भी मानवीय सृष्टि के आरंभकर्ता के रूप में माना गया है। प्रसाद ने श्रद्धा को हृदय के प्रतीक के रूप में चिंतित किया गया है-

' हृदय की अनुकृति बाह्य अपार।'

प्रसाद ने श्रद्धा को स्वानुभूति,अंतःज्योति, सौंदर्य - सत्य आनंद, प्रेरणादायनी, रमणीय, कल्याणी, सुषुप्ति को दूर करने वाली, शक्ति रुपिणी आदि रूपों में वर्णित किया है।

श्रद्धा मनु के मन में ऊर्जा का संचार कर, उसे कर्मकाण्ड के लिए प्रेरित करती है । मनु के नैराश्यपूर्ण हृदय में वह सांसारिक जीवन के प्रति आसक्ति जगती है। भौतिक सुखों से विमुख मनु को अखंण्ड आनंद का मार्ग दिखलाती है। मनु उसके महत्व को हृदयांगम करते हुए कहते हैं –

' हे सर्वमंगले ! तुम महती ;

सबका दुख अपने पर सहती,

कल्याणमयी वाणी कहती

तुम क्षमा- निलय में ही रहती ।'

कामायनी की कथा भूमि मिथकीय होने के कारण वहां आरोप और फलादेश से ऊपर वास्तवबोध का आदिम स्तर है। स्वप्न में श्रद्धा देखती है कि मनु का अपनी पथ प्रदर्शिका इड़ा के प्रति दुर्भाव और बलात प्रयोग के कारण वहां की प्रजा और देव शक्ति का कोपभाजन बनते हैं।

श्रद्धा कॉप उठी सपने में, सहजा उसकी आंखें खुली, यह क्या देखा मैंने? कैसे वह इतना हो गया छली? स्वजन स्नेह में भय की कितनी आशंकाएं उठ आती अब क्या होगा, इसी सोच में व्याकुल रजनी बीत चली।

श्रद्धा का यह स्वप्न सत्य होता है। प्रसाद ने संघर्ष सर्ग के प्रारंभ में ही लिखते हैं-

'श्रद्धा कथा स्वप्न किंतु वह सत्य बना था'

इस प्रकार प्रसाद ने वैदिक साहित्य की श्रद्धा के ऐतिहासिक स्वरूप को मिथक साहित्य का अवलंब लेकर कामायनी महाकाव्य की नायिका की नहीं अपितु सृष्टि के नवनिर्माण की स्फूपूर्ति दायिनी एवं समरसत्ता की साक्षात् देवी है। यह मिथक का ही प्रभाव है जो उसके सहज रूप को व्यक्त करता है।

इड़ा - प्रसाद ने झड़ा को बुद्धि का प्रतीक माना है। वैदिक साहित्य में झड़ा का अनेक अर्थों में प्रयोग हुआ है। कामायनी के प्रयोजन से दो युक्तियां महत्वपूर्ण है।

(1) श.प.ब्रा. (1-8-1-11) मैं कहा गया है की झड़ा मनु की दुहिता है। 'सा एषा निदानेंन इसलिए इसको मानवी नाम दिया गया है।

(2) तैतरीय ब्राहमण (1-1-4) में इला या इड़ा मनु की मानवीय पुत्री का नाम है, 'इड़ा के मानवीय यज्ञानुगाशीन्यासीत' यहां इड़ा को यज्ञों का प्रकाशक बताया गया है। प्रसाद ने इड़ा के पौराणिक एवं वैदिक रूप को मिथकीय साहित्य के माध्यम से उसकी विचारशील होने की प्रवृत्ति के कारण उसे नियामक के रूप में प्रस्तुत किया है।

यथा -

'इड़ा नियम – परतंत चाहती मुझे बनाना,

निर्वाधित अधिकार उसी ने एक न माना ।'

' बढ़ चला इड़ा के पीछे, मानव भी था डग भरते ।'

कामायनी की इड़ा आधुनिक नारी का प्रतीक है जो बुद्धि के स्तर पर जीती है । अंत में वह श्रद्धा के सानिध्य में सांस्कृतिक आशीर्वाद में रंग जाती है -

' भर रहा अंक श्रद्धा का

मानव उसको अपना कर

था झड़ा शीश चरणों पर

वह पुलक भरी गदगद स्वर ।'

कुमार - कामायनी में कुमार के संक्षिप्त परिचय मिलता है। जो मानव मन के रूप में चिंतित है। श्रद्धा द्वारा कुमार को इड़ा को सौंप जाने पर वह उसके सानिध्य में वृद्धि कर जीवन के पथ पर अग्रसर होता है।

' तब देख कैसी चली रीति ,

मानव ! तेरी हो सुयश गीति ।'

किलात – आकुलि - किलात आकुलि आसुरी प्रवृत्तियों के प्रतीक माने गये हैं, जो मनु को पशुबलि का तथा सांसारिक भोगों की ओर उन्मुख करते हैं। बाद में मनु की विपत्ति में उनके विरुद्ध जन नेतृत्व कर अपनी आसुरी वृत्ति की कृतघ्नता का प्रदर्शन करते हैं।

निष्कर्षतः आज के वैज्ञानिक युग में मनुष्य अपनी संवेदनाओं को तार्किकता के तुला पर परखने लगा है। जिसके कारण हमारी डगमगाती हुई संस्कृति की नीव को मजबूत बनाए रखने में मिथक साहित्य का एक आधार है। मिथकीय अध्ययन साहित्य अन्वेषण की नई दिशा है। आधुनिक युग की जनवादी, मानवतावादी

और समाज शास्त्रीय चेतन ने जहां मिथको अथवा अपना पूरावृत्तो के संकलन और अध्ययन की प्रवृत्ति पुरस्तर किया, वहीं साहित्य क्षेत्र में उनके उपयोग और प्रयोग की विशेषताओं की अनुसंधान परख दृष्टि को भी प्रेरित किया । प्रसाद के द्वारा अग्रजारित (सामरस्य) को भी स्वीकृत दी है। मिथकीय अन्वेषण इन्हीं स्थापित मान्यताओं को आगे बढ़ाती है। मिथको के संबंध में यह बात सर्वस्वीकृत है कि वह आदिम युग के वास्तविक विश्वासों की अभिव्यक्ति हैं। मिथकीय कल्पना के संदर्भ में यह कहना सर्वथा समीचीन होगा कि मिथको का वर्ण्य विषय आज कल्पना का विषय बन चुका है। मिथक की खोज मानवीय समग्रता या संपूर्णता की खोज है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि किसी मिथक विशेष के विषय में इदमिथग रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। कारण की एक ही समय मैं मिथक विशेष के अनेक अर्थ रूपों का मिलना एक सामान्य बात है। समग्रता मिथक आज समय की आवश्यकता भी है और अपने युग की देंन भी।

संदर्भ सूची

1. प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल - हिंदुस्तानी पत्रिका - मिथकीय चेतना - पृ. 36

2. जयशंकर प्रसाद - कामायनी - श्रद्धा सर्ग - पृ. 55

3. जयशंकर प्रसाद – कामायनी – चिंता सर्ग - पृ. 09

4. जयशंकर प्रसाद – कामायनी - चिंता सर्ग - पृ.11

5. जयशंकर प्रसाद – कामायनी - चिंता सर्ग - पृ. 12

6. जयशंकर प्रसाद – कामायनी – श्रद्धा सर्ग - पृ. 46

7. जयशंकर प्रसाद – कामायनी – दर्शन सर्ग - पृ. 227

8. जयशंकर प्रसाद – कामायनी – स्वप्न सर्ग - पृ.170

9. जयशंकर प्रसाद – कामायनी - संगर्ष सर्ग - पृ. 171

10. जयशंकर प्रसाद – कामायनी – संगर्ष सर्ग - पृ. 172

11. जयशंकर प्रसाद – कामायनी – आनंद सर्ग - पृ. 259

12. जयशंकर प्रसाद – कामायनी – आनंद सर्ग - पृ. 259